धरती के नीचे से बह रही सरस्वती को धरा पर लाने की शुरुआत

जिसे भी खुदाई का पता चला दौड़ा चला आया रोलाहेड़ी में

खुदाई शुरू होने पर बोले स्पीकर कंवरपाल गुर्जर

मेरे लिए गौरवमय पल, जब मैं 80 साल का हो जाऊंगा तो बताऊंगा सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के मौके पर था मौजूद

कुलभूषण सैनी | यमुनानगर

सरस्वती नदी की खुदाई करते स्पीकर कंवरपाल गुर्जर व खुदाई काम में सहयोग करते ग्रामीण व श्रद्धालु।

देश में हर तरह भूमि अधिग्रहण बिल को लेकर हल्ला चल रहा है। वहीं बिलासपुर क्षेत्र में जमीन देने व कब्जा मुक्त करवाने के लिए लोगों के उत्साह दिखा। मौका था गांव रोलाहेड़ी में सरस्वती नदी की खुदाई का। जब लोगों को नदी की खुदाई का पता चला तो भारी संख्या में ग्रामीण वहां पर खुदाई के लिए पहुंचे। जिले के 43 गांवों की जमीन से नदी गुजरती हुई गांव गजलना से कुरुक्षेत्र जिले में प्रवेश करेंगी। खुदाई के दौरान किसी भी किसान के चेहरे पर विरोध के भाव नहीं थे। लोग नदी को धरा पर उतराने के लिए उत्सुक दिखे।

काठगढ़ निवासी सुलतान सिंह व किसान धर्मपाल व रानीपुर के महीपाल का कहना है कि उनके लिए सरस्वती नदी का बहना सबसे खुशी है। अब उनके क्षेत्र में पवित्र नदी की धारा बहने से खुशहाली आएगी। वहीं रानीपुर की छीमा अपने दो साल के बेटे के साथ खुदाई के लिए पहुंची। किसानों ने अपनी फसल व पेड भी खुद काटे।

हरियाणा से गुजरात तक सरस्वती का पानी मीठा मिलेगा : खुदाई का शुभारंभ करते स्पीकर कंवरपाल गुर्जर ने कहा कि यह मेरे के लिए गौरवमय का पल है। जब मैं 80 साल का हो जाऊंगा तो बताऊंगा कि सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के दौरान मैं मौके पर था। मेरी दादी बताती थी कि सरस्वती का पानी मीठा है यह सच था। हरियाणा से लेकर गुजरात तक जहां से भी सरस्वती का पानी पी लो मीठा ही मिलेगा। इस नदी के पुनर्जीवित होने से देश में पानी की कमी नहीं रहेगी। इस दौरान उन्होंने 11 लाख रुपए देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने का सपना सरस्वती शोध संस्थान के चेयरमैन दर्शन लाल जैन ने देखा था वह पूरा हो गया है। अब वह दिन दूर नहीं जब सरस्वती नदी कल-कल करती जमीन पर बहेगी। सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए 16 साल संघर्ष करने वाले दर्शन लाल जैन ने कहा कि यह नदी हमारी संस्कृति ही नहीं है बल्कि जरूरत भी है। नदी के पुनर्जीवित होने से बाढ़ का खतरा कम होगा। सोमनदी जब उफान पर होती है तो तबाही मचाती चली जाती है, लेकिन सरस्वती नदी की खुदाई से पानी तबाही नहीं मचाएगी।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार नदी की खुदाई में किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं आने देगी। 50 करोड़ रुपए देने की सीएम ने घोषणा कर दी है। अगर बजट की और जरूरी पड़ी तो बजट जारी कराया जाएगा। इस दौरान कार्यक्रम में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सुभाष बराला भी पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने सरस्वती को धरा पर लाने की कुरुक्षेत्र रैली में बात कही थी वह पूरी होती दिख रही है।

एडीसी डॉ. सतबीर सिंह सैनी ने कहा कि 2005 में मैं राजस्थान गया तो वहां पर मुझे सरस्वती नदी के बारे में चर्चा सुनने को मिली। उस समय भी मैं यमुनानगर में एडीसी था। तभी से मेरे भी मन में यह बात आई कि क्यों न इस दिशा में हम प्रयास किए जाएं। सरस्वती शोध संस्थान के साथ मिलकर प्रशासन ने प्रयास किया और वह प्रयास सफल रहा।

बिलासपुर. गांव रोलाहेड़ी गांव में सरस्वती नदी के खुदाई कार्य का शुभारंभ करते स्पीकर कवंरपाल गुर्जर, शोध संस्थान के चेयरमैन दर्शन लाल जैन व अन्य।

उद्गम स्थल और आदिबद्री में पूजा करने पहुंचे बराला

खुदाई स्थल पर कार्यक्रम खत्म होने पर विस स्पीकर कंवरपाल, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सुभाष बराला और विधायक सरस्वती उद्गम स्थल और आदिबद्री मंदिर में पहुंचे। यहां पर सभी ने पूजा की। उनका कहना था कि पूजा में उन्होंने प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की है।

हीरो ऑफ द जर्नी

88 वर्षीय दर्शन लाल जैन का संघर्ष उनकी जुबानी

15 साल लग गए, मगर कभी हौसला न डिगा

भास्कर न्यूज | यमुनानगर

बढ़ती उम्र के साथ हौंसला भी बढ़ता गया। मंजिल कितनी भी दूर रही हो, इसकी परवाह नहीं की। संघर्ष के रास्ते में कई उतार चढ़ाव आए, लेकिन कभी डगमगाए नहीं। 15 साल के लंबे संघर्ष के बाद सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने का मुकाम हासिल कर ही लिया। गांव रोलाहेड़ी में मंगलवार को जो ऐतिहासिक पल था उसकी पीछे सरस्वती शोध संस्थान के चेयरमैन 88 वर्षीय दर्शन लाल जैन का संघर्ष ही तो था। मंगलवार दोपहर 12.10 बजे जैसे ही नदी में धारा लाने के लिए पहली कस्सी चली तो दर्शन लाल जैन के चेहरे पर खुशी साफ छलक रही थी। उम्र के इस पढ़ाव में भले ही उनके चेहरे की चमक को झुरियों ने ढक लिया हो, लेकिन मंगलवार को उनकी चेहरे की चमक को कोई नहीं रोक पाया।

यहां से मिली प्रेरणा

दर्शन लाल जैन ने बताया कि 1989 में सरस्वती नदी पर शोध करने के लिए उज्जैन से डॉ. पदम श्री डब्ल्यू एस वाकंकर आए। तब उनके मन में सवाल आया कि सैकड़ों मिलों दूर से आकर डॉक्टर नदी पर शोध कर रहे हैं। वे तो नदी किनारे रहते हैं। इस पर क्यों न काम किया जाए। उनके बाद डॉ. पदम श्री की अचानक मौत हो गई। तब उनको बड़ा झटका लगा। कुछ दिन बाद उनकी कार का चालक राम कुमार सुस्त दिखाई दिया। उन्होंने चालक को बोला कि वह नहाकर नहीं आया क्या। चालक ने तुरंत जवाब दिया वह हर रोज सरस्वती नदी में स्नान करता है। उसकी बात सुनकर दर्शन लाल जैन चालक के साथ मुस्तफाबाद (सरस्वती नगर) के पास सरस्वती नदी पर गए। नदी एक स्रोत के रूप में बहती है। नदी कि दुर्बल दशा देखकर बड़े परेशान हुए। सरस्वती नगर से आदिबद्री उद्गम स्थल तक सरस्वती नदी के किनारे गए। तभी लुप्त हो रही सरस्वती नदी को बचाने का सकंल्प लिया।

दर्शन लाल जैन

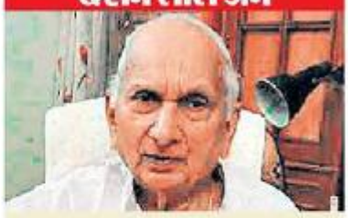

बच्चों तक इतिहास पहुंचाने के लिए भी कर रहे हैं संघर्ष

सरस्वती नदी को बचाने के साथ-साथ दर्शन लाल जैन पानीपत युद्ध में शहीद हुए योद्धाओं के स्मारक बनवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सरकार से मांग कि वह खुद स्मारक बनाए या फिर स्मारक बनवाने के लिए योद्धा स्मारक संस्था को अनुमति की जाए। ध्यान रहे हमारे यहां पर आक्रमणकारियों के स्मारक हैं, मगर शहीदों के नहीं है। इस तरह से जैन बच्चों को इतिहास बताने में लगे हैं। देश का संक्षिप्त इतिहास के बारे में उन्होंने 20 हजार पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं। बच्चों को पुस्तकें देखकर इतिहास की प्रतियोगिता करवाते हैं। आरएसएस के लिए भी काम कर रहे हैं।

यहां से पुष्टि हुई नदी की

ओएनजीसी द्वारा अफ्रीका (लीबिया) के रेगिस्तान में तेल भंडार के लिए ड्रिल किया जा रहा था। तभी 565 मीटर पर पानी का भंडार मिला। उसके बाद ओएनजीसी ने राजस्थान के जैसलमेर में ड्रिल किया। वहां पर भी पानी का भंडार मिला। हरियाणा के कलायत और जैसलमेर से मिले पानी के भंडारे के सेटेलाइट से फोटो व सैंपल भी लिए गए,जो सरस्वती नदी की पुष्टि करते थे। इसी तरह से राजस्थान के जैसलमेर में भी इस तरह के तथ्य मिले थे।

1999 से शुरू हुआ नदी को पुनर्जीवित करने का सफर

दर्शन लाल ने बताया कि सरस्वती को जीवित करने के लिए 1999 में सरस्वती नदी शोध संस्थान का रजिस्ट्रेशन करवाया। तत्कालीन डीसी विजेंद्र सिंह से मिले। राजस्व से रिकार्ड निकलवा कर जिले के 43 गांवों का दौरा किया। अधिकांश स्थानों पर अतिक्रमण मिला। लोगों को समझाकर नदी को कब्जा मुक्त कराया गया। बिन सरकारी बजट के सन 2000 में राज्यपाल बाबू महावीर प्रसाद से आदिबद्री में नदी को पुनर्जीवित करने के लिए शुभारंभ करवाया। छह साल के बाद सरकार ने स्वीकार किया वास्तव में सरस्वती नदी अस्तित्व में है। 2006 में सिंचाई मंत्री कैप्टन अजय यादव को हालात से रूबरू कराया। 21 अप्रैल 2008 सरकार ने लेटर भेजकर उनको चंडीगढ़ बुलाया। इस मीटिंग में ओएनजीसी के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। ड्रिल करने के लिए दो मई 2008 को अनुमति मिल गई। ओएनजीसी ने भी स्वीकृति कर निशानदेही की।